नेहरू ग्राम भारती
(मानित विश्वविद्यालय), इलाहाबाद

ज्योतिष कर्मकाण्ड एवं वास्तुशास्त्र
एक वर्षीय डिप्लोमा
पाठ्यक्रम 2018–19

संस्कृत विभाग में सत्र 2011 से डिप्लोमा कोर्स संचालित है। ज्योतिष–वास्तु एवं कर्मकाण्ड में डिप्लोमा का उद्देश्य विद्यार्थियों को तद्विषय उच्चशिक्षा अध्ययन तथा रोजगार हेतु मार्ग प्रशस्त करना है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी स्वरोजगार प्राप्त करने एवं सेना में धर्मगुरू के रूप में अपनी सेवा देने में समर्थ सिद्ध होंगे।

प्रथम–पत्र–ज्योतिष विद्या

पूर्णांक–100

नोटः प्रत्येक इकाई से दो–दो प्रश्न होंगे। जिनमें एक दीर्घउत्तरीय एवं एक टिप्पणी परक होगा। प्रत्येक इकाई 20 अंक के होंगे। जिनमें प्रत्येक इकाई से लघुउत्तरीय प्रश्न की होंगे।

इकाई–(1) ज्योतिशास्त्र का सामान्य परिचय [20]

(क) वेदाङ्ग एवं ज्योतिषशास्त्र

(ख) स्कन्धविभाजन

(ग) ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्त्तक एवं आचार्य परम्परा

(घ) ज्योतिष में मुहूर्त–विचार

चन्द्रमा, घातक चन्द्र, चन्द्रवास, लग्न का कालमान, सूर्यवास तिथि विषयक चिन्तन, यात्रा में ग्राह्य एवं वर्ज्य नक्षत्र, यात्रा में त्याज्य घड़ी एवं यात्रा–विचार, तिथि, नक्षत्र योग, करणादि।

इकाई–(2) पञ्चाङ्ग [20]

(क) दिन एवं तिथि (ख) करण

(ग) भद्रा (घ) नक्षत्र

(ङ) क्रूर तिथि (च) दग्धा तिथि

(छ) पञ्चाङ्गः साधन एवं इष्टकाल का ज्ञान।

इकाई–(3) जन्मकुण्डली (जन्मपत्र निर्माण एवं फलादेश) [20]

(क) इष्टकाल (ख) भयात् एवं भभोग

(ग) ग्रह स्पष्टीकरण

(घ) जन्मकुण्डली के द्वादश भावों को अंशों में व्यक्त करता

(ङ) जन्मकुण्डली मेलापक

(च) जन्मकुण्डली में अन्तर्दशा–महादशा का ज्ञान

इकाई–(4) ग्रहज्ञान [20]

(क) ग्रहों का स्वरूप तथा भिन्नता

(ख) ग्रहों की मूल त्रिकोण राशि

(ग) शुभ ग्रह एवं पाप ग्रह

(घ) पूर्ण चन्द्र एवं क्षीण चन्द्र

(ङ) ग्रहों की उच्च तथा नीच राशियाँ

(च) ग्रहों की दृष्टि

इकाई–(5) राशि परिचय 20

(क) राशियों का स्वरूप एवं नाम तथा नामकरण का आधार

(ख) राशियों की उत्पत्ति

(ग) राशियों के स्वामी

(घ) राशियों की आकृतियाँ

(ङ) उच्च एवं नीच राशि

(च) क्रूर–अक्रूर, चर आदि संज्ञायें।

(छ) गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश मुहूर्त विचार

द्वितीय–प्रश्न पत्र–वास्तुविद्या एवं कर्मकाण्ड

पूर्णांक–100

नोटः निम्नलिखित प्रत्येक इकाई में से दो–दो प्रश्न होंगे। जिनमें एक प्रश्न दीर्घुत्तरीय एवं एक प्रश्न टिप्पणी परक होगा। प्रत्येक इकाई 20 अंक के होंगे। जिनमें प्रत्येक इकाई से लघु उत्तरीय प्रश्न भी अनिवार्य होगे।

इकाई–(1) वास्तुशास्त्र का सामान्य परिचय 20

(क) वास्तु का उद्भव–विकास एवं प्रयोजन

(ख) वास्तुशास्त्र का महत्व, उपयोगिता एवं लक्ष्य

(ग) वास्तुशास्त्र के ग्रन्थ एवं आचार्य

(घ) वास्तु एवं इसके भेद

(ङ) वर्तमानकाल में वास्तुशास्त्र के अध्ययन केन्द्र

इकाई–(2) भूखण्ड विचार 20

(क) भूमि की गुणवत्ता एवं भूमि के प्रकार

(ख) भूमि प्लवत्व एवं प्रभाव

(ग) भूमि परीक्षण एवं चयन

(घ) भूखण्ड की आकृति एवं प्रभाव

(ङ) भूमि के शुभाशुभत्व पर विचार

इकाई–(3) (क) वास्तु की दिक्कालाधारित मान्यतायें 20

(ख) वास्तु चक्र एवं तद्विषयक स्थान निर्णय

(ग) वास्तु एवं फेंगसुई में सूर्य–चन्द्र का प्रभाव

(घ) वास्तु के पर्यावरणीय सूत्र एवं अधुनातक प्रौद्योगिकी।

इकाई–(4) आवासीय वास्तु 20

(क) वर्तमान संदर्भ में भवन निर्माण

(ख) द्वार–विचार एवं सोपान विचार

(ग) खिड़की/बरामदा

(घ) कुआँ, बोरिंग, आदि

(ङ) भवन की ऊँचाई।

इकाई–(5) कर्मकाण्ड

(क) कर्मकाण्ड में ज्योतिष एवं वास्तु

(ख) ग्रहशान्ति विधान

(ग) आनुष्ठिक कर्मकाण्ड, सन्ध्याविधि

(i) वास्तु पूजन

(ii) भूमि शोधन

(iii) गृहप्रवेश पूजन विधान

(iv) सत्यनारायण पूजन विधान

(v) रुद्राभिषेक

(vi) नवरात्र पूजन

(vii) महामृत्युञ्जय जप

(viii) यज्ञोपवीत संस्कार (उपनयन संस्कार)

(ix) विवाह पद्धति

(x) श्राद्ध कर्म आदि

(घ) श्रीमद्भागवद्गीता का कर्मयोग

पाठ्यक्रम सम्बन्धी महत्वपूर्ण बिन्दु–

1. यह पाठ्यक्रम सभी वर्गों के छात्र/छात्राओं के लिए अर्ह है।
2. उक्त पाठ्यक्रम में छात्र/छात्राओं के नामांकन की कुल संख्या 25 (पच्चीस) होगी।
3. छात्र/छात्राओं से प्राप्त होने वाला शुल्क–प्रति छात्र/छात्रा रु0 3000/– (रु0 तीन हजार मात्र)। आगामी सत्र–2019–20 से 3500/–(रु0 तीन हजार पांच सौ मात्र) रहेगा।
4. प्रवेश योग्यता–10+2 अथवा उत्तरमध्यमा या समकक्ष।
5. शिक्षण हेतु अतिथि प्रवक्ता–04
6. प्रति सप्ताह कक्षाओं का संचालन–06 कक्षा (प्रायोगिक सहित)
7. परीक्षा दो प्रश्न पत्रों में होगी। प्रत्येक पत्र 150–150 अंक के होंगे। जिनका प्रत्येक प्रश्न पत्र में विभाजन इस प्रकार है–

- लिखित परीक्षा (सैद्धान्तिक परीक्षा)–100 अंक
- मौखिकी/प्रायोगिक परीक्षा–40 अंक
- आन्तरिक परीक्षा–10 अंक
- प्रति सप्ताह कक्षा–06
- विशेष योग्यता हेतु अंक–75 प्रतिशत या उससे अधिक
- प्रथम श्रेणी 60 प्रतिशत या उससे अधिक
- द्वितीय श्रेणी 45 प्रतिशत या उससे अधिक
- तृतीय श्रेणी 33 प्रतिशत या उससे अधिक